L.N. MITHILA UNIVRSITY
DARBHANGA (BIHAR)
PAPER IV
B.A PART-II

Dr. PRAMOD KUMAR SAHU
Sub - PSYCHOLOGY
GUEST - TEACHER
V.S.J college RAJNAGAR
MADHUBANI
pramodkumardbg2018@gmail.com.

Carl Rogers: Phenomenological Theory of personality.

कार्ल रोजर्स (Carl Rogers, 1902-1987) ने व्यक्तित्व के जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है, वह घटना विज्ञान या संवृतिशास्त्र (Phenomenological) के नियमों (Principles) पर आधारित है। संवृतिशास्त्र वह शास्त्र होता है। जिसमें व्यक्ति की अनुभूतियों, भावों एवं मनोवृत्तियों तथा उनके अपने बारे में या आत्मन् (self) के बारे में तथा दूसरों के बारे में व्यक्तिगत विचारों का अध्ययन विशेष रूप से किया जाता है। वास्तव में रोजर्स के सिद्धान्त को मानवतावादी आन्दोलन (humanistic movement) जिसके समर्थक मैस्लो (Maslow) भी हैं, एवं पूर्णतः घटनात्मक (Phenomenological) सिद्धान्त माना गया है। रोजर्स के व्यक्तित्व सिद्धान्त को आत्म-सिद्धान्त (self theory) या व्यक्ति-केन्द्रित सिद्धान्त (person-centered theory) भी कहा जाता है।

(i) इस सिद्धान्त में मानव प्रकृति के कुछ-खास-खास पूर्वकल्पनाओं जैसे स्वतंत्रता (Freedom), विवेकपूर्णता (Rationality), विषमस्थिति (heterostasis) तथा अपरिवर्तनीयता पर आधारित बल डाला गया है।

(ii) दूसरी तरफ, इस सिद्धान्त में मानव प्रकृति के शारीरगठनात्मक पूर्वकल्पना पर नाम मात्र का बल डाला गया है।

रोजर्स के व्यक्तित्व सिद्धान्त की व्याख्या निम्नलिखित तीन प्रमुख भागों में बाँट कर किया गया है।

(A) व्यक्तित्व के स्थायी पहलुएँ
(B) व्यक्तित्व की गतिकी
(C) व्यक्तित्व का विकास

(A) व्यक्तित्व के स्थायी पहलुएँ (Enduring aspects of personality) रोजर्स का व्यक्तित्व सिद्धान्त उनके द्वारा प्रतिपादित क्लाइंट-केन्द्रित मनश्चिकित्सा (client centered psychotherapy) से प्राप्त अनुभवों पर आधारित है।

(i) प्राणी (organism) रोजर्स (Rogers 1959) के अनुसार प्राणी एक ऐसा दैहिक जीव है। जो शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक (psychological) दोनों ही तरह से कार्य करता है। इसमें सांवेदिक अंग तथा आत्मन (self) दोनों ही सम्मिलित होते हैं। रोजर्स का मत है कि प्राणी सभी तरह की अनुभूतियों का केंद्र होता है। इन अनुभूतियों में अपने दैहिक गतिविधियों से संबंधित अनुभूतियाँ तथा बाह्य - बाह्य वास्तविकता की घटनाओं के प्रत्यक्षण की अनुभूतियाँ दोनों ही से सम्मिलित होती है। रोजर्स के अनुसार सभी तरह की चेतन एवं अचेतन अनुभूतियों के योग से जिस अंग का निर्माण होता है।

(ii) आत्मन (self) रोजर्स का व्यक्तित्व सिद्धांत का सबसे महत्वपूर्ण संप्रत्यय (construct) है। धीरे-धीरे अनुभव के आधार पर सांवेदिक अंग का एक भाग अधिक विशिष्ट हो जाता है। और इस भाग को ही रोजर्स (Rogers) ने आत्मन (self) की संज्ञा दिया है। रोजर्स के अनुसार आत्मन व्यक्तित्व की एक अलग विमा (dimension) नहीं होता है। जैसे कि फ्रायड के अनुसार अहं (ego) व्यक्तित्व का एक अलग विमा होता है। रोजर्स का मत है किसी व्यक्ति में आत्मन (self) न ही होता है बल्कि स्वयं आत्मन (self) का अर्थ ही सम्पूर्ण प्राणी से होता है आत्मन के दो उपतंत्र है।

(क) आत्म - संप्रत्यय (self - concept)

(ख) आदर्श - आत्मन (ideal self)

आत्म - संप्रत्यय (self - concept) - आत्म - संप्रत्यय से तात्पर्य व्यक्ति के उन सभी पहलुओं (aspects) एवं अनुभूतियों से होता है। जिससे व्यक्ति अवगत होता है। हालाँकि उसका यह प्रत्यक्षण हमेशा सही नहीं होता है। आत्म - संप्रत्यय (self concepts) के व्यक्ति प्रायः विशेष शब्दों के रूप में व्यक्त करता है। जैसे - मैं एक व्यक्ति हूँ - जो आत्म - संप्रत्यय की दो विशेषताएँ है। प्रथम विशेषता यह है कि आत्म - संप्रत्यय (self - concept) का एक बार निर्माण हो जाने से उसमें सामान्यतः परिवर्तन नहीं होता है। हाँ, कुछ सामाजिक कारकों से उसमें परिवर्तन हो सकता है।

(ख) आदर्श आत्मन (ideal self) आत्मन (self) का दूसरा उपतंत्र (subsystem) आदर्श - आत्मन है। आदर्श -

आत्मन (Ideal self) अथवा आदर्श आत्मन व्यक्ति द्वारा अपने बारे में विकसित किये गए एक ऐसी छवि से होता है। जिसे वह आदर्श मानता है। दूसरे शब्दों में आदर्श आत्मन में वे गुण शामिल होते हैं। जो प्रायः धनात्मक होते हैं। तथा जिसे व्यक्ति अपने विकसित होने की तमन्ना करता है।

(B) - व्यक्तित्व की गतिकी (Dynamics of personality)

रोजर्स ने अपने व्यक्तित्व गतिकी की व्याख्या करने के लिए एक महत्वपूर्ण अभिप्रेरक का वर्णन किया है। जिसे उन्होंने वस्तुवादी प्रवृत्ति कहा है।

(i) वस्तुवादी प्रवृत्ति पूरे शरीर की दैहिक क्रियाओं से सम्बद्ध होती है। अथवा मतलब यह हुआ कि यह जैविक लक्षण है। न कि मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति। जैविक स्तर पर वस्तुवादी प्रवृत्ति व्यक्ति की कुछ आवश्यकताओं जैसे - भूख, प्यास, हवा आदि की आवश्यकता की पूर्ति करता है एवं साथ-ही साथ शरीर के अंगों की संरचनाओं एवं कार्यों को भी पुष्ट एवं मजबूत बनाता है।

(ii) वस्तुवादी प्रवृत्ति का उद्देश्य मात्र तनाव (Tension) में कमी करना नहीं होता है, बल्कि स्वयं तनाव में वृद्धि भी होती है। दूसरे शब्दों में रोजर्स का मत था कि व्यक्ति लक्ष्य पर पहुँचने के तनाव में जो कमी आती है उससे न मात्र व्यवहार प्रभावित होता है साथ-ही साथ व्यक्ति का व्यवहार अपने आप को स्वयं विकसित करने एवं उन्नत बनाने के प्रयास से भी प्रभावित होता है।

(iii) रोजर्स का मत है कि वस्तुवादी प्रवृत्ति सभी तरह के प्राणियों अर्थात मानव एवं पशुओं दोनों में ही होती है।

(iv) वस्तुवादी प्रवृत्ति एक ऐसी कसौटी के रूप में कार्य करता है जिस पर स्वयं व्यक्ति अपनी जिन्दगी की अनुभूतियों की परख या मूल्यांकन करता है। मूल्यांकन के इस प्रक्रिया को जैविक मूल्य निर्धारण प्रक्रिया कहा जाता है। मूल्यांकन के बाद जिन अनुभूतियों द्वारा व्यक्ति अपने आत्मन को प्रोत्साहित कर पाता है उसे व्यक्ति धनात्मक मूल्य देता है तथा जिन अनुभूतियों द्वारा व्यक्ति अपने आत्मन का विरोध होते पाता है उसे नकारात्मक मूल्य प्रदान करता है।

रोजर्स का मत है कि व्यक्ति की दो मुख्य आवश्यकताएँ (Need) होती हैं जिनसे उसका व्यवहार नियंत्रित और निर्देशित होता है।

(i) अनुरक्षण आवश्यकताएँ (maintenance Need)

(ii) संवृद्धि आवश्यकताएँ (enhancement Need)

(८) व्यक्तित्व का विकास (Development of personality)

रोजर्स ने फ्रायड (Freud) एवं एरिक्सन (Erikson) के समान व्यक्तित्व की कोई अवस्था सिद्धान्त (Stage theory) का प्रतिपादन नहीं किया है। दूसरे शब्दों में रोजर्स ने व्यक्तित्व के विकास का वर्णन विभिन्न चरणों या अवस्थाओं में फ्रायड एवं एरिक्सन के समान नहीं किया है। उन्होंने व्यक्तित्व के विकास में व्यक्ति तथा व्यक्तियों की अनुभूतियों में संगति को महत्वपूर्ण बतलाया है।

(i) एक पूर्ण रूपेण प्रकार्य व्यक्ति अपनी अनुभूतियों को अधिकाधिक स्पष्ट शब्दों में रखते हैं ऐसे व्यक्ति अपनी अनुभूतियों को मनों पर ध्यान देते हैं, और उसके अनुरूप व्यवहार करने की कोशिश करते हैं वे उन अनुभूतियों को अस्वीकार नहीं करते हैं।

(ii) एक पूर्णरूपेण प्रकार्य व्यक्ति की दूसरी विशेषता यह है कि जिन्दगी के प्रत्येक क्षण का उपयोग ऐसे व्यक्ति पूरी तरह से करते हैं तथा प्रत्येक क्षण में जीते रहना चाहिए।

(iii) एक पूर्णरूपेण प्रकार्य व्यक्ति की तीसरी विशेषता यह है कि ऐसे व्यक्ति एक निजी विश्वास के साथ व्यवहार करते हैं और उन्हें अपने व्यवहार की सार्थकता पर पूर्ण विश्वास होता है ऐसे व्यक्ति कोई व्यवहार करने पहले सामाजिक मानकों द्वारा कम निर्देशित होते हैं।

(iv) रोजर्स के अनुसार एक पूर्णरूपेण प्रकार्य व्यक्ति की चौथी विशेषता आनुभविक स्वतंत्रता है। आनुभविक स्वतंत्रता से तात्पर्य व्यक्ति के इस अनुभूति से होता है कि वह कोई भी कार्य करने के लिए पूर्णतः स्वतंत्र होता है तथा अपने प्रत्येक व्यवहार एवं उसके परिणाम के लिए वह स्वयं ही जिम्मेदार है।

(v) पूर्णरूपेण प्रकार्य व्यक्ति की एक विशेषता यह भी है कि इसमें सर्जनात्मकता का गुण होता है ऐसे व्यक्ति रचनात्मक ढंग से अपना समायोजन करते हैं, तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ण संतुष्टि करने की कोशिश करते हैं।

Dr. Pramod Kumar Sahu,

Date - 17/04/2020

Scanned with CamScanner